



What is Arya Samaj?

Arya Samaj founded by Maharishi Dayanand Saraswati is an institution based on the teachings of Vedas for the welfare of universe.

It propagates the universal doctrines of humanity.

It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 40

02/2018-19

MONTHLY

February 2018

Dates for your diary (Festivals celebrated at Arya Samaj Bhavan)

Rishi Bodh Utsav - Sunday 18th February 2018

11am – 1pm

Holi – Sunday 4th March 2018

11am – 1pm

Ram Navmi – Sunday 25th March 2018

11am-1pm

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS

(Charity Registration No. 1156785)

188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS,

BIRMINGHAM, B7 4SA - Tel: 0121 359 7727

E-mail– enquiries@arya-samaj.org

Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj	3
Maturity of our Soul	By Mr Krishan Chopra 4
योग-विद्या-३	आचार्य डॉ. उमेश यादव 6
Vaanprastha Sacrament (14 Sanskar)	10
Matrimonial Service	14
List of Festivals for year 2018	15
News (पारिवारिक समाचार)	16
ORDINARY Members & Aryan Voice	19
Arya Samaj West Midlands New Home	20
Letter of Appeal for Donations to Arya Samaj West Midlands	21

**For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,
Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.
Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org**

10 Principles of Arya Samaj

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rig Ved, Yajur Ved, Sam Ved and Atharva Ved contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

Maturity of our Soul

By Mr Krishan Chopra

अजः पक्वः स्वर्गे लोके दधातिपञ्चौदनो निर् ऋतिं बाधमानः । तेन
लोकान्तसूर्यवतो जयेम ॥ अथर्ववेद ९.५.१८

Ajah pakvah svarge loke dadhati panchoudanao nirrtim dadhati
I ten lokantsuryavato jayema II

Athrva Veda 9.5.18

Meaning in Text Order

Ajah = the soul

Pakvah = of determined nature

Svarge = salvation

Loke = region

Dadhati = keeps

Panchoudano = five elements

Nirrtim = ignorance

Badhmanah = bondage

Tena = through that

Lokan = regions

Suryavatah = in sun shine regions

Jayema = may win.

Meaning

The eternal soul living in the body of five elements when mature through knowledge, actions and meditation establishes itself in the state of spiritual light. This is how it wins the state of high splendour and enlightenment.

Contemplation

Here **ajah** means beginningless and unborn. The scriptures tell us that they are three i.e God, the soul and matter. Here is the mention of the cooking of ajah which means the soul and it lives in the body of five elements and they are earth, water, fire, air and ether. Due to that our five sense organs are also known as **oudan**. It is our duty that we have to mature our soul and the five sense organs.

The soul in its identity is pure and enlightened and blissful but when it comes into the body, it embraces the objects of worldly affairs and it becomes impure, enveloped with darkness and becomes distressedl... The senses which should obey his command become the cause of distraction from his aim. This is the result of the immaturity of the soul and senses.

It is our duty to attain the stage of maturity of the soul and senses. This is only possible through knowledge and penance. The mature soul and mature senses will take the soul on to its virtuous path as the skilful chariot driver controls his horses. The mature soul generates the ability in itself to cross over all hurdles, obstacles, problems and failures and it will successfully climb the steps to reach its destination which is emancipation. As a result of that we will be able to reach the stage where we will conquer the regions of the divine light of the sun and the bright conditions of the illumination of emancipation.

योग-विद्या-३

आचार्य डॉ. उमेश यादव

अब तक हमने योग की भूमिका समझी है। पिछले अंकों में योग तथा योग के आठ अंगों के बारे में परिभाषा गत् समझा है। यम-नियम को पहले समझना है। इनकी परिभाषा तो पिछले अंक में प्रस्तुत की गयी है पर आज के अंक में हम समझेंगे कि यम-नियम के लाभ क्या हैं। पहले यम को जानें। यम के पाँच अंग हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। अब हम एक-एक करके महर्षि पतंजलि-योग-सूत्रों के आधार पर इनका लाभ विचार करेंगे।

अहिंसा- अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः-योग द. २.३५

मनसा वाचा कर्मणा हिंसा न करने को ही अहिंसा कहते हैं। इसका दूसरा अर्थ है कि हमें सदा यह विचार करना है कि हम सदा मनुष्य तथा अन्य प्राणियों की भी रक्षा करें। अनावश्यक हम किसी भी प्राणी पर प्रहार न करें। स्वयं की रक्षार्थ या जगोपकारार्थ अगर परिस्थितिवस कभी प्रहार भी करना पड़े तो मन में दया व सहिष्णुता अवश्य रखें। इससे अनावश्यक हिंसा नहीं होगी। ध्यान रहे कि हमें शत्रु, दुष्ट, पापी आदि विपरीत चलने वाले से घृणा नहीं है अपितु उनकी शत्रुता, दुष्टता वा पापकर्मशीलता से शिकायत है। हमें प्रयास यही करना चाहिये कि हमारे सद् व्यवहार से उनके दोष मिट जाये। यह प्रवृत्ति ही योगियों, आचार्यों वा जगहितैषि ऋषियों की होती है। यह योग तंत्र है। राज तंत्र के नियम पृथक् हैं। देश हित, जग हित व मानव हित में कभी कोई हिंसा हो भी जाये तो

देखना होगा यह कितना कानूनन है । कोई भी व्यक्ति कानून को अपने हाथ नहीं ले सकता । इन बातों को समझते हुये जो मनुष्य अहिंसा को साध लेता है, उसके जीवन से वैर भाव छूट जाता है । ऐसा मनुष्य या योगी किसी से कभी द्वेष, ईर्ष्या या कटुता नहीं रखता । इसी भाव धारा में आकर महर्षि दयानन्द ने कितने ही दुष्टों को अपनी दया भाव से छोड़ दिया है । इसका परिणाम भी कालान्तर में अच्छा ही निकलता है । महापुरुषों के सानिध्य व ईश्वर की कृपा से ऐसे दुष्ट जनों में भी परिवर्तन आ जाता है । इसमें दोनों ओर से मन की पवित्रता अनिवार्य है । हम कह सकते हैं कि समरसता, प्यार, दया, सहिष्णुता, सुधारत्व आदि मानवीय गुणों की स्थापना में अहिंसा यम अत्यन्त सहायक है ।

सत्य- सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्- योग. द. २.३६

सत्यप्रतिष्ठायाम्- सत्य के आचरण सिद्ध हो जाने पर क्रियाफल-आश्रयत्वम् अर्थात् कर्म फलरूपी आश्रय को सम्यक् प्राप्त हो जाते हैं । जब एक व्यक्ति मन, वचन व शरीर से सत्य का ही आचरण सर्वत्र करने लग जाता है तो उसका सब कर्म सफलीभूत होने लग जाता है । ऐसे सत्य मनुष्य का जीवन ही अन्यो के लिये प्रमाण बन जाया करता है । ऐसे ही लोग आप्त पुरुषों में गिने जाते हैं । वे ही जगोपकार करने में सक्षम होते हैं और जरूरत पड़े तो धर्म, देश व जगहित में अपनी जान भी दे देते हैं । निश्चय ही वे आत्मवीर होते हैं । वे सत्य की स्थापना में कभी किसी से डरते नहीं । महर्षि दयानन्द ने भी कहा कि चाहे कमजोर शरीर वाला ही क्यों न हो, अगर वह सत्यवादी है, धर्मात्मा है तो उससे डरो अर्थात् उसके वाक्यों का सम्मान करो । इसके विपरीत यह भी कहा कि अगर कोई महाबली हो पर

दुष्ट हो, अन्यायी वा पापी हो तो उससे कभी न डरो बल्कि डटकर उसका मुकाबला करो । यह है सत्य की शक्ति ।

अस्तेय- अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्- योग.द. २.३७

अस्तेय की प्रतिष्ठा होने पर अर्थात् पूर्णतया चोरी त्याग कर देने पर सर्वरत्नोपस्थानम्- सब प्रकार के रत्नों की प्राप्ति होने लगती है । जो मनुष्य चोरी त्याग कर अपना आचरण सत्य सिद्ध कर लेता है वह ईश्वर की कृपा के पात्र हो जाता है । सच्चे मन से जब पुरुषार्थ करता है तब ईश्वरीय न्याय से उसे यथावत् धन आदि रत्न कर्मफलरूप में तो मिलते ही हैं, हर सच्चा मनुष्य भी ऐसे लोगों की वस्त्र, धन आदि देकर मदद करता है । पूर्ण तया चोरी त्याग हो जाने पर ही तो मनुष्य साधु बन जाता है, योगी बन जाता है और सच्चे मन से अपने जीवन में चल पड़ता है । वह सर्वत्र सफल होने लगता है । चाहे वह परिवार में रहे या समाज में, कार्य में रहे वा व्यापार में, चोरी त्याग प्रवृत्ति उसे सर्वत्र प्रतिष्ठा दिलायेगी ।

ब्रह्मचर्य- ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः-योग. द.२.३८ ब्रह्मचर्य की साधना होने पर वीर्यलाभ अर्थात् शारीरिक व बौद्धिक बल की वृद्धि होती है । वीर्य की रक्षा जितनी अधिक हो पाती है उतनी ही अधिक आयु भी बढ़ती है । शरीर निरोग व बलवान होता है, साथ ही वृद्धि का विकास भी होता है । इसी कारण जीवन के प्रारम्भिक काल में अधिक से अधिक जो वीर्य रक्षा कर ब्रह्मचारी बन विद्यार्जन करता है, वह अपने गृहस्थ जीवन में भी अधिक संतुष्ट रहता है और जीवन में अधिक आनन्द को पाता है । गृहस्थ में रहकर भी जो ऋतु गामी होते हैं, वे अधिक स्वस्थ व प्रसन्न रहते हैं । यह परस्पर की समझ व संयम पर निर्भर करता है । ब्रह्मचारी

का एक अर्थ ईश्वरोपासक भी है । जिसमें वीर्य रक्षा, ज्ञानार्जन व ईश्वरभक्ति होगी वही सच्चा ब्रह्मचारी होगा । वही जीवन की हर अवस्था में सफल होकर आनन्द में रहेगा ।

अपरिग्रह- अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्ता सम्बोधः- योग द. २.३९

अपरिग्रहस्थैर्ये- अपरिग्रह की पूर्ण स्थिरता होने पर अर्थात् इसका दृढ़तापूर्वक पालन करने पर जन्मकथान्तासम्बोधः- जन्म कथा रूप रहस्य को जानने की ईच्छा तीव्र हो जाती है । वस्तुतः जब योगी या साधक को अपरिग्रह की पूरी सिद्धि हो जाये तो उसे जीवन की गहराई को जानने की ईच्छा होने लगती है । मैं कौन हूँ ?, मेरा शरीर क्या है ?, आत्मा क्या है ?, मैं आत्मा हूँ या शरीर ? , मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जाऊँगा ? इत्यादि प्रश्न मन में उभरने लगते हैं और तदनुरूप वह कोशिश भी करने लग जाता है । इस प्रकार योगी या साधक अपने जन्म जन्मान्तर के रहस्य को जानने में स्वाध्याय, तप, साधना व ईश्वरीय उपासना आदि सत्प्रयासों को करना शुरू कर देता है । अपनी निष्ठा व पुरुषार्थ से एक दिन वह अपने मँजिल को पा ही लेता है । अपरिग्रह का अर्थ ही होता है पूर्ण त्याग । अनावश्यक वस्तु को छोड़ देना , केवल जीवन भरण-पोषण के लिये ही कम से कम आवश्यक वस्तु को ही पास में रखना । साँसारिक वस्तुओं से ही नहीं अपितु साँसारिक सम्बन्धों से भी मोह भंग करने में अपरिग्रह पूर्ण सहायक है ।

ये तो यम के लाभ लिखे गये हैं, आगे इसी प्रकार नियम के लाभ भी लिखे जायेंगे ।

VAANPRASTHA SACRAMENT **(14th SANSKAR)**

Whatever mental and physical preparation is done by a person in order to live in a jungle is known as a Vaanprastha Sacrament. To go and live in a jungle is to renounce a house hold life and live a ascetic life. A person who has already been blessed with his/her own children, grandchildren is in a ideal stage of his/her life to proceed to Vaanprastha Sacrament. The essence of Vaanprastha Sacrament is that a person who is mentally and physically ready to renounce his/her household life voluntarily and live a ascetic, bachelor, celibate and disciplined life in a jungle is initiated by a learned person to lead such a life. This Sacrament is guided by a learned priest and by performing Havan.

The junction of end of household part and beginning of Vaanprastha period in a person's life is called Yogagni (meeting point of two important phases of a human life). In Aarsh Granth (Books which are based on true teachings of Vedas and written by renowned Scholars like Maharishi Dayanand Saraswati) this Yogagni is described as "Trinachiketaagni". To know this in more detail please read Katoupnishad.

The first 25 years of a human life is called Brahmaacharya (Celibate) phase, from 26 to 50 years Grihastha (Household married life), 51 to 75 years Vaanprastha and finally 76 to 100 years is Sanyaas phase.

After 50 years of life a person's scalp hair starts changing colour from black to grey/white. This is the beginning of Vaanprastha Sacrament. After explain the importance of married life and house hold duties to his/her children one should walk away from the worldly things and spend the remaining life for the welfare of society and lead a ascetic and celibate life. A male person can leave his wife with her children or take her with him if she desires after

performance of Vaanprastha Sacrament. Both can live in a jungle or any other place but they should have separate bedroom to sleep and observe celibacy. A wife who decides to stay in the house hold with her children should encourage her children to do Yoga, Havan, study Vedas, aarsh Granth on a regular basis and live his/her life following the teachings of Vedic Dharma. A Vaanprasthi man should study Vedas and Aarsh Granth while living in a jungle, teach and promote the Vedic knowledge to people surrounding him. He should ask people living in nearby area for food or eat vegetables which grow in jungle. He should improve his spiritual knowledge by studing Vedas and Aarsh Granth, meditate God by performing Upaasana. He should spread his knowledge about Vedas and Upanishads to human beings living near him. These are the main aims of all Vaanprasthi people.

Now a days vaanprasthi people also live in cities and villages. But they must live away from his children and stay in places which are suitable for performing Yoga, Havan, Upaasana and regular self studies of Vedas and Aarsh Granth.

It is important to inform the readers that a Vaanprasthi person can remain a Vaanprasthi for rest of his/her life or progress to Sanyaas Sacrament. Normally the period os Sanyaas Sacrament starts after age of 75 years but an individual can progress to Sanyaas after completion of period of Brahmacharya as long as that person is fully committed to live life of a celibate, reading Vedas and Aarsh Granth, renounce all worldly comfort, do Upasaana (meditate God) and work for benefit of society, country or world. It is the duty of such a person who wants to take Sanyaas to take care of his/her all other wordly responsibilities prior to taking Sanyaas Sacrament.

Main aims of Vaanprastha Sacrament- Asceticism {penance), abandonment of worldly comforts, desires and attachments, regular reading of Vedas and Aarsh Granth and worship and meditation of Almighty God are the main objects and aims of Vaanprastha Sacrament. While following the above aims and objects a

Vaanprasthi person should work for spiritual and other kinds of benefit of a society, country and the world.

There are four main aims of life of a human being. These are known as Dharma, Artha, Kaam and Moksha.

DHARMA- The practice of fair and impartial justice together with that of truthfulness in word, deed and thought and the like- in a word, that which is in conformity (agreement) with the will of God, as written in Vedas- even that I call Dharma. But the practice of that which is NOT free from partiality and injustice as well that of untruthfulness in word, deed and thought- in a word that which is opposed to the will of God, as embodied in Vedas, even that I call Adharma.

ARTHA- The righteously (morally right or justifiable) and honestly acquired wealth alone constitutes Artha while that which is acquired by foul means is called Anarth.

KAMA- The enjoyment of legitimate desires with the help of honestly acquired wealth constitutes Kama.

MOKSHA- The freedom of soul from pain and suffering of every description and subsequent career of freedom in the all pervading God and his immense creation for a fixed period of time and its resumption of earthly life after the expiration of that period constitutes Moksha (salvation).

The means of salvation are the worship of God, in other words, the practice of Yoga, the performance of righteous deeds, the acquisition of true knowledge by the practice of Brahmacharya, the society of wise and the learned (Satsang), love of true knowledge, purity of thought and life of activity and so on.

In Vaanprastha and Sanyaas Sacraments Dharma and Moksha are of more importance compared to Artha and Kaam. To gradually decrease the essential requirements of day to day life is also the duty of a Vaanprasthi person. This kind of sacrifice helps the local

government to fight poverty in a society and country. An experienced Vaanprasthi person, according to his/her abilities and skills, can provide education to poor students free of cost, can teach the society a healthy and spiritual way of life and encourage learned and spiritual members of a society to do the same for the poor and needy members of the society. By performing these acts Vaanprasthi people of a society can help the local governments to eradicate illiteracy, poverty, fight common diseases and help to make a society healthy and spiritually strong. These are also very important and necessary ways to make people good citizens of a country.

Summary- Vaanprastha Sacrament is associated with specific aims and objects. This Sacrament should be performed with all due consideration. After performance of this Sacrament a Vaanprasthi person lives a life of detachment from worldly things and house hold life, prayer and meditation of Almighty God, spends time in regular study of Vedas and Aarsh Granth, preaches to members of a community and encourages them to live a healthy and spiritual life. He/she lives the life with more importance to Dharma and Moksha (Salvation) and teaches the common human beings the true meanings of Dharma, Artha, Kaam and Moksha.

Preaching at the Vaanprastha Sacrament- On the occasion of this Sacrament a learned person should preach and explain in detail the important aspects of Vaanprastha Sacrament to the individual who is going to be Vaanprasthi and encourage the members of the audience to lead a healthy and spiritual life in society.

Written by
Acharya ji Dr Umesh Yadav in Hindi
And
Translated by
Dr Narendra Kumar in English

Matrimonial Service

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands is dedicated to its matrimonial members to provide a service that will help members find a partner for marriage within our community. We feel it is time to make a few changes to help with this process and move forward with the times.

Changes we have made in April 2017:

Website:-

- A new data base on the website that will give members an option to add a **photo** if they wish and a space for members to write a **bio** about themselves and what they are looking for in a partner.
- Existing members would have received a letter in May with information about what we need from you to update your profile. Once you have received this letter please fill it out and send back to us soon as possible, so we can update our **NEW** data base and you can start using the new system.

Matrimonial Service:-

- Members will now be given the **option** to directly contact each other or have the **option** for parents to contact each other.
- All **new** members will be contacted by the office staff for phone conversation during the application process.
- We are also looking in to ways of making our Matrimonial events more successful.

List of Festivals for year 2018

Festival	Actual Date of Festival	Date for celebration in Arya Samaj
Makkar Sankranti	Sunday 14 th January	Sunday 14 th January
Republic Day of India	Friday 26 th January	Sunday 28 th January
Rishi Bodh Utsav.	Tuesday 13 th February	Sunday 18 th February
Holi	Friday 2 nd March	Sunday 4 th March
Ram Navmi	Sunday 25 th March	Sunday 25 th March
Arya Samaj Foundation Day	Saturday 7 th April	Sunday 29 th April
Vedic Vivah Mela	n/a	TBC
Annual General Meeting.	n/a	Sunday 29 th July
Independence Day of India	Wednesday 15 th August	Sunday 19 th August
Ved Katha (8 days)	n/a	Sunday 26 th August to Sunday 2 nd September
Raksha Bandhan	Sunday 26 th August	Sunday 26 th August
Shri Krishna Janmasthanmi	Monday 3 rd September	Sunday 2 nd September
Special Satsang for University Students	n/a	Sunday 9 th September
Gayatri Maha Yajna	n/a	Sunday 23 rd September
Vedic Vivah Mela	n/a	TBC
Dasahahara	Friday 19 th October	Sunday 21 st October
Diwali	Wednesday 7 th November	Saturday 10 th November

News

Get Well Soon:

- This is to inform our members and readers that our Patron Shri Gopal Chandra MBE is recovering in Ryland View Nursing Home, Arnhem Way, Tipton, DY4 7HR and telephone number 0121 520 1577. We all wish him a speedy recovery.
- This is to inform our members and readers that Mr Vishwa Nath Bhandari, ex-Vice President of Arya Samaj West Midlands year 2001-2003 is recovering in Gracewell of Edgbaston Care Home, Speedwell Road, Edgbaston, Birmingham, B5 7PR and telephone number 0121 796 0796. We all wish him a speedy recovery.
- Mrs Deepika Datta is on waiting list for a kidney transplant. We wish her to get better soon.

Condolence:

- Mrs. Sushila Sanehi & Family for loss of her beloved husband Mr. Arjan Singh Sanehi (83) life member of Arya Samaj West Midlands. May God grant the departed soul eternal peace and give strength to the family members to bear their loss.
- Dr. Anil Tandon & Family for loss of his beloved mother Mrs. Urmil Tandon member of our Yog-class at Day Centre in Arya Samaj West Midlands. May God grant the departed soul eternal peace and give strength to the family members to bear their loss.

Congratulations:

- Miss Rekha Gore for the celebration havan of her birthday. May God bless her happiness & good health.
- Dr. U A Pathak & Family for his daughter finding a partner at Arya Samaj Vivah Mela 2015 held in our Bhavan. Wish them a happy life together.

Many congratulations to all the mentioned families who have had auspicious havan at their residences on different occasions or Sunday Vedic Satsangs in Arya Samaj Bhavan.

Donations to Arya Samaj West Midlands:

- | | |
|--|------|
| • Dr. U A Pathak | £125 |
| • Dr. P.D. Gupta | £51 |
| • Miss Alisa Agarwal | £31 |
| • Mr. Ranveer Seerutun | £30 |
| • Mrs. Nirmal Devi Prinja - in sweet memory of her late beloved husband Mr Satya Dev Prinja. | £100 |

Donations to Arya Samaj West Midland through the Priest-Services:

- | | |
|----------------------|------|
| • Miss Rekha Gore | £51 |
| • Mrs Sushila Sanehi | £100 |

Thank you for all your Donations!

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. 4th February 2018 & 4th March 2018.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

**E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org**

Ordinary Membership
Of Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands

Dear Arya Samaj Members,

From January 2018 and onwards ORDINARY members of Arya Samaj West Midlands will have to pay £20 per annum to remain on the list of current members.

Please note any amount of donation to Arya Samaj West Midlands will not count towards payment of membership fee.

Aryan Voice

Those of you who are on our email database will receive your copy of monthly bulletin "Aryan Voice" on your emails from September 2017 and onwards and NOT by post unless you request our office for a hard copy.

Of course our members who do not use internet or email services and matrimonial members will keep receiving hard copy of Aryan Voice by post as it is at present time.

We must live within our means.

I am sure you will fully support our efforts regarding this matter.

Kind regards.

Yours sincerely
Dr. Narendra Kumar
Chairman
The Board of Trustees

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands
NEW HOME

Dear Members and Friends

Refurbishment work has started at our new headquarter 321, Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR. The work will take a few months and should be completed by 31st March 2018.

The new building is in middle of our own community area and is located on main bus route with bus stop just opposite to our building.

We are aiming to move to our new Arya Samaj Bhavan in early 2018. Until then we continue with our Sunday congregation, Day Centre and other activities at 188, Inkerman Street, Nechells, Birmingham, B7 4SA

We are planning to run quite a few exciting projects in our new headquarter for example:

- **Mothers and Toddlers group**
- **Various arts related activities like classical Indian Dances, speech and drama and music.**
- **Up to date Library facilities**
- **Day Centre activities**
- **Spiritual talks by learned dignitaries**

The above projects are in addition to our every Sunday congregation.

To run these various facilities we need a good number of volunteers.

For those of you with urge of giving Nishkam Seva to Arya Samaj and our community this is your golden opportunity.

Please do not hesitate and come forward.

Your services will be highly appreciated irrespective of amount of time dedicated by you to your Arya Samaj.

Please get in touch with us either through email at enquiries@arya-samaj.org Or Telephone us on 0121 359 7727.

Letter of Appeal for Donations to Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands

Sadar Namaste

I hope you are keeping well and in good spirits.

It gives me great pleasure to inform you that on 23rd August 2017 our Arya Samaj Society purchased Trinity Methodist Church, 321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR. This building is a replacement for 188, Inkerman Street building due to compulsory purchase order from Department for Transport for building High Speed Railways 2.

The Department for Transport (DFT) has paid us money to buy this church and are paying most of the money needed for refurbishment of this building like new gas central heating system, electric wiring, two bed room flat inside the building for resident priest, some kitchen work and flooring etc.

We still need more money for the work to be done **BUT NOT** financed by DFT for example:

- Interior painting and decorations of halls and rooms
- Sound systems for the main hall and middle hall
- Light fittings and LED bulbs for the whole building
- New carpets and furniture for the priest flat
- Some kitchen equipment, Refrigerator and freezers
- New tables and chairs for halls, library and offices
- Computers, Book shelves for library and offices, filing cabinets.
- Printing of a new Gayatri Mantra Calendar with new address of Arya Samaj

- Publication of English translations of Vedic Sanskar Vidhi (Vedic Sacraments Manual) and new Vedic Sandhya and Havan books for Sunday congregations

We need about **£100,000** fund to do all above necessary works.

We will honour those people who donate £1000 and above by putting their names on one of the walls of our building.

Donations can be made:

- **By cheque - Payable to 'Arya Samaj West Midlands' and sent back to us at 188 Inkerman Street, Nechells, Birmingham, B7 4SA**
- **Bank Transfer – The Co-operative Bank
Name of account – Arya Samaj
(Vedic Mission) West Midlands
Account number – 65839135
Sort Code – 08.92.99.**
- **Those of you who would like to pay in instalments please set up a standing order by requesting a form from our office.**

The money donated by you will help our present and future generations.

So please donate generously. No matter how small every donation will be appreciated.

Kind regards.

Yours sincerely

Dr. Narendra Kumar, Chairman